विचार बिन्दु

चापलूसी का ज़हरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुँचा सकता जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझ कर पी न जाएँ।

–प्रेमचंद

बड़ी संपदा है ई-कचरा

वस्तुओं के उपभोग के मामले में पूरी दुनिया स्पष्टत: दो हिस्सों में बंटी हुई है। एक वह दुनिया है जिसे हर चीज़ नई और बेहतर चाहिए, और दूसरी वह दुनिया है जो उसके पास जो है उससे गहरा लगाव रखते हुए उसे ही बरतते रहना चाहती है। भारत में हम आम तौर पर एक कहावत जैसी उक्ति सुनते हैं –'दादा खरीदे, पोता बरते!' हम चीज़ों के साथ स्थायी रिश्ता बनाते हैं और उस रिश्ते की वजह से जब तक भी मुमकिन होता है उन्हीं पुरानी चीज़ों को बरतते रहते हैं। न केवल बरतते रहते हैं, इस बात पर गर्व भी करते हैं कि कोई चीज़ हमारे पास कितने समय से है! लेकिन इसी के बरक्स एक और दुनिया है जिसमें हर चीज़ पलक झपकते-झपकते ही पुरानी हो जाती है और उसे बरतने वाले उससे निजात पाकर उसी चीज़ के नए और बेहतर संस्करण को पाने के लिए लालायित हो उठते हैं। यह मानसिकता बहुत यत्न पूर्वक निर्मित की गई है।

आप पर चारों तरफ से होने वाले विज्ञापनों की बौछार आपको पुराने से छुटकारा पाने और नए को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। उत्पादक तरह-तरह की योजनाएं बनाकर आपको ललचाते हैं कि आप अपने पुराने उत्पाद से छुटकारा पाएं और नया ले लें। आखिर आप कितना बचेंगे उनके फैलाये जाल से! मोबाइल के नए मॉडल आ जाते हैं, घरेलू उपकरणों के पिछले रूपों में थोड़ा बदलाव कर उनके नए अवतार बाज़ार में आपको आवाज़ देते हैं, सॉफ्टवेयर और तकनीक के मामले में तो यह और भी अधिक होता है। किसी उपयोगिता से आपका ठीक काम चल रहा है लेकिन क्योंकि उसकी निर्माता कंपनी को आपकी जेब से पैसा खींचना है, वह उस उपयोगिता के लिए अपना तकनीकी समर्थन देना बंद करने की घोषणा कर देती है और आप विवश हो जाते हैं

नई उपयोगिता खरीदने के लिए। यही हार्डवेयर के मामले में भी होता है। मान लीजिए मेरे पास दस साल पहले खरीदा एक प्रिण्टर है। अब उसके लिए ड्राइवर (एक तरह का सॉफ्टवेयर) नहीं मिलता तो मुझे उस अच्छे भले और बढ़िया तरह से काम कर रहे प्रिण्टर को कबाड़े में डाल कर नया खरीदने के लिए मज़बूर होना पड़ता है। विभिन्न उत्पादों के निर्माता तरह-तरह के अभियान चलाकर आप पर एक मानसिक दबाव बनाते हैं कि आप पुराने उत्पाद को फेंक कर नया उत्पाद खरीदें। उनके द्वारा काम में ली गई युक्तियों का ही परिणाम होता है कि हममें से बहुत सारे लोग अपने अच्छी तरह से चल रहे उपकरणों आदि से लज्जित अनुभव करने लगते हैं और उन्हें फेंक-फांक कर नया उपकरण खरीदने को विवश हो जाते हैं। और यह सारी दुनिया में हो रहा है। भारत भी इससे अछूता नहीं है।

बहुत बार ऐसा भी होता है कि विज्ञापनों आदि के दबाव में आकर आप नया उत्पाद खरीद लेते हैं लेकिन पुराने से पिण्ड छुड़ा नहीं पाते हैं। आप कोई नया मोबाइल, नया टीवी, नया लैप टॉप, या कोई भी और नया उत्पाद खरीद लेते हैं लेकिन पुराने वाले को फेंकने का भी मन नहीं करता।

इस तरह आपके घर में ही कबाड़ का ढेर बढ़ता जाता है। बहुत बार ऐसा भी होता है कि जिस उत्पाद की बजाय आपने नया उत्पाद खरीदा है वह भी चालू हालत में ही होता है। सत्या गुप्ता नामक एक अध्येता ने कुछ समय पहले एक सर्वेक्षण करवाया था, जिसमें भाग लेने वाले उत्तरदाताओं के पास औसतन चार मोबाइल थे जो चालू हालत में थे, लेकिन काम में नहीं लिए जा रहे थे। इधर इस कबाड़, विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक कबाड़, को लेकर नई चेतना जगी है और लोग फिक्रमंद होने लगे हैं। इण्डियन सेलुलर एण्ड इलेक्ट्रॉनिक एसोसिएशन (आईसीईए) और एक नामी आईटी कम्पनी एसेंचर ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया है कि भारतीय घरों में मोबाइल और लैपटॉप मिलाकर ऐसे बीस करोड़ साठ लाख उपकरण हैं जो बेकार पड़े हैं। इनका क्या किया जाए? अब आप चौंकने के लिए तैयार हो जाएं! विशेषज्ञों का कहना है कि यह कबाड़ असल में बहुत बड़ी संपदा है, अगर इसका ठीक से उपयोग किया जाए! हमारे घरों में ये जो बेकार मान लिए गए उपकरण पड़े हैं ये हमारे देश की समृद्धि के लिए बड़े सहायक साबित हो सकते हैं। इन उपकरणों को ई-कचरा कहा जाता है और अध्ययनों से पता चला है कि एक सर्कुलर इलेक्ट्रॉनिक्स बिज़नेस मॉडल को अपना कर सन 2035 तक इस कचरे से सात अरब डॉलर की कमाई की जा सकती है। अगर पब्लिक और प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल को अपनाया जाए तो यह कमाई बढ़कर बीस अरब डॉलर तक पहुंच सकती है। सरल भाषा में बताएं तो सोच यह है कि कबाड़ मानकर तिरस्कृत कर दिए गए उन उपकरणों में से ज़्यादातर को थोड़ी बहुत देखभाल, सार संभाल या रिपेयरिंग से काम में आने योग्य बनाया जा सकता है और इनका अच्छी तरह से उपयोग किया जा सकता है। जो लोग इनको संवारने या दुरुस्त करने का काम करेंगे उन्हें रोज़गार मिलेगा और इस तरह बेरोज़गारी की जिस समस्या से हमारा देश जूझ रहा है उस समस्या को कम करने में मदद मिलेगी। विशेषज्ञों का कहना यह है कि भारत लैपटॉप, मोबाइल और इतर इलेक्ट्रॉनिक सामान के पुन: उपयोग, उसकी मरम्मत, उसे काम चलाऊ बनाने और उसे अद्यतन करने के काम का बहुत बड़ा बाज़ार बन सकता है। इन विशेषज्ञों के अनुसार यह सेक्टर कम से कम पचास लाख रोज़गार पैदा कर सकता है। जब विशेषज्ञ यह दावा कर रहे हैं तो उनके पास इसके लिए पर्याप्त तर्क भी हैं। उनका सोच यह है कि भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी के लिए प्रशिक्षित और काबिल तकनीशियनों और इंजीनियरों की बहुत बड़ी संख्या है और उनमें से बहुत सारे अभी रोज़गार के तलबगार हैं। अगर ठीक से योजना बनाकर काम किया जाए तो भारत विश्व का इलेक्ट्रॉनिक्स रिपेयरिंग डेस्टिनेशन बन सकता है। इस संभावना को इस बात से भी बल मिलता है कि दुनिया के बहुत सारे अन्य देशों की तुलना में भारत में मानवीय श्रम सस्ता है इसलिए अन्य देशों से भी उपकरण हमारे यहां रिपेयरिंग आदि के लिए आने लगेंगे।

विशेषज्ञों का कहना यह है कि भारत लैपटॉप, मोबाइल और इतर इलेक्ट्रॉनिक सामान के पुनः उपयोग, उसकी मरम्मत, उसे काम चलाऊ बनाने और उसे अद्यतन करने के काम का बहुत बड़ा बाज़ार बन सकता है। इन विशेषज्ञों के अनुसार यह सेक्टर कम से कम पचास लाख रोज़गार पैदा कर सकता है।

ऊपर हमने जिन सत्या गुप्ता को उद्धृत किया है वे एपिक फाउण्डेशन और वीएलएसआई सोसाइटी ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष हैं। उनके अनुसार,; अगर हम अपने इलेक्ट्रॉनिक गैजेट की रिपेयरिंग करा कर इस्तेमाल करते हैं तो इकॉनॉमी में तीस फीसदी वैल्यू जोड़ते हैं। कहने का मतलब यह कि अगर हम तीन साल चल चुके किसी मोबाइल को रिपेयरिंग करवा कर एक साल और चलाते हैं तो तीस प्रतिशत विदेशी मुद्रा बचा सकते हैं। यह इसलिए कि अभी भी हमारे यहां ज़्यादातर मोबाइल और उनके पार्ट्स आयातित हैं। ऐसा करने से तैंतीस प्रतिशत ई-कचरा भी कम होगा।; उनके इस कथन को इस तथ्य से जोड़कर देखा जाना चाहिए कि हमारे देश में पैट्रोल और सोने के बाद सबसे ज़्यादा आयात इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का होता है। फरवरी 2021 से अप्रेल 2022 के बीच 550 अरब डॉलर के आयात बिल में अकेले इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों की हिस्सेदारी 62.7 अरब डॉलर की थी। इसका मतलब यह हुआ कि अगर हम कबाड़ मान लिये गए उपकरणों का प्रयोग करते हैं तो न केवल बहुत सारे लोगों को रोज़गार मिलेगा, विदेशी मुद्रा भी बचेगी। इसमें एक बात और जुड़ जाती है और वह यह कि मोबाइल जैसे छोटे-से उपकरण में 14 धातुएं प्रयुक्त होती हैं और उनमें से अनेक बहुत कीमती और दुर्लभ होती हैं। उनमें से कम से कम आठ ऐसी हैं जिन्हें हमें आयात ही करना पड़ता है।

इस दिशा में हम अगर आगे बढ़ते हैं तो न केवल बचत करने और चीज़ों को बर्बाद न करने की भारतीय जीवन शैली का अनुकरण करेंगे, जो उपकरण किसी भी वजह से हमारे लिए अनुपयोगी हो गए हैं उन्हें काम चलाऊ बनाकर उन लोगों तक पहुंचा कर, जिनके पास पर्याप्त वित्तीय साधन नहीं हैं, उनकी भी सहायता करेंगे। लेकिन यह सब कहने में जितना आसान है, व्यवहार में उतना आसान नहीं है। एक बड़ी बात तो यही है कि अब ज़्यादातर उत्पादक ऐसे उत्पादन बनाने लगे हैं जिन्हें रिपेयर किया ही नहीं जा सकता है। ऐसे उत्पादकों को भी विश्वास में लेना और अगर ज़रूरत पड़े तो उन पर समुचित वैधानिक या अन्य तरह का दबाव बनाकर उन्हें रिपेयर होने योग्य उपकरण बनाने के लिए प्रेरित करना ज़रूरी होगा। उनके सहयोग के बिना यह योजना आगे नहीं बढ़ सकती। वैसे भारत सरकार ने एक पोर्टल बनाया है जो वारण्टी अवधि में उपकरणों अदि की रिपेयरिंग की सुविधा प्रदान करता है। अभी तक सत्रह बड़े ब्राण्ड इस पोर्टल पर आ चुके हैं।

लेकिन जब तक यह सारी योजना मूर्त रूप ले, हमें अपनी कामनाओं पर नियंत्रण करके अनावश्यक उत्पादों की खरीद की अपनी लालसा पर नियंत्रण करना होगा। यह देश और दुनिया के भविष्य के लिए बहुत ज़रूरी है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

दशलक्षण धर्म : "आत्मा के स्वाभाविक धर्म"

भागचंद जैन

जैन धर्म का पर्वराज दशलक्षण धर्म पर्व की आज 19/09/2023 को उत्तम क्षमा धर्म से शुरुआत एवं क्षमा वाणी पर्व मनाने के साथ समापन

जैनधर्म एक अनादि, अनंत, शाश्वत धर्म है। जैन धर्म की शुरुआत इस अवसर्पिणि काल के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान के पूर्व से है।

जैन धर्म के तीन मुख्य त्योहारों में 1) षोडश कारण भावना पर्व - भाद्रपद कृष्णा एकम से अश्विन कृष्णा एकम तक 31-32 दिनों तक मनाया जाता है। षोडश कारण भावना का पालन करने से तीर्थंकर प्रकृति का आश्रव (बंधन) होता है, 2) अष्टांहिका पर्व - यह भक्ति का पर्व है, यह वर्ष में तीन बार मनाई जाता है एवं 3) दशलक्षण धर्म पर्व - यह भी वर्ष में तीन बार आता है, लेकिन भाद्रपद में आने वाले इस पर्व को बढ़े ही भक्तिभाव के साथ मनाया जाता है। इस दौरान आत्मा के दस धर्मों की विशेष आराधना करते है। दस धर्मों का पालन करना साधकों, तपस्वियों के लिए अनिवार्य है एवं श्रावकगण भी आत्म कल्याण के दश धर्मों का पालन करने की चेष्टा करते है।

दशलक्षण पर्व आत्मानुभूति का मार्ग प्रशस्त करता है, इसको पर्वराज भी कहा गया है। जैन धर्म में इस त्यौहार का महत्वपूर्ण स्थान है। यह पर्व जिनमंदिरो में विशेष पूजा एवं बड़े ही भक्तिभाव के साथ मनाया जाता है। इस त्यौहार में जैन धर्मावलंबी सामान्यत: व्यापार एवं नौकरी से अवकाश पर रहते है। दिगंबर धर्म में 10 दिन तक चलने वाला यह पर्व इस वर्ष 19 सितंबर भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी से प्रारंभ होकर 28 सितंबर - अनंत चतुर्दशी तक जारी रहेगा। इसी क्रम में अश्विन कृष्णा एकम, 30 सितंबर को क्षमावाणी पर्व मनाया जायेगा।

दशलक्षण धर्म पर्व जैसा की नाम से आभास होता है दस धर्मों की पूजा एवं पालना की जाती है। ये दस धर्म है - 1) उत्तम क्षमा, 2) उत्तम मार्दव, 3) उत्तम आर्जव, 4) उत्तम शौच, 5) उत्तम सत्य, 6) उत्तम संयम, 7) उत्तम तप, 8) उत्तम त्याग, 9) उत्तम आकिंचन एवं 10) उत्तम ब्रह्मचर्य का पालन कर आत्म शुद्धि की जाती है, आत्मानुशासन की और अग्रसर होते है। इन सभी दस धर्म के अंतर्गुण नाम से ही स्वत : स्पष्ट है। ये सभी दस धर्म एक दूसरे के पूरक है। किसी भी एक धर्म की पालना, साधना करने पर शेष सभी धर्म स्वत: आत्मसात हो जाते है एवं साधक के

जीवन का अंग बन जाते है।

इन दस दिनो के दौरान जैन धर्मावलंबी जिन अभिषेक, शांतिधारा, पूजा, पाठ, स्वाध्याय यथावत करते है। प्रति दिन नित्य नियम पूजा के साथ दसों दिन सभी दशलक्षण धर्मों की आराधना का विधान है किंतु महत्ता की दृष्टि से प्रत्येक दिन क्रमश: अलग-अलग धर्म के गुणों का विशेष वर्णन सूक्ष्मतम रूप में करने के साथ आत्मसात किया जाता है। दशलक्षण पर्व के दौरान जैन धर्म के मानने वाले साधना के मार्ग पर चलने हेतु व्रत, उपवास रखते है एवं इस अवधि में पूरी तरह सात्विक भोजन किया जाता है। बहुत से भक्त दस दिनों तक अन्न-जल ग्रहण ही नहीं करते है।श्रावकगण इस समय का सदुपयोग त्याग, तपस्या, आराधना और साधना का मार्ग अपना कर करते हैं। यह पर्व अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करने, आत्मशुद्धि करने एवं कर्मो का क्षय कर मोक्षमार्ग प्रशस्त करने के लिए मनाया जाता है।

जैन धर्मावलंबी इस पर्व के दौरान स्वाध्याय में पूरा ध्यान लगाते है।

पर्व की अवधि में दिया गया दान का भी अपना महत्व है, सभी जैन धर्मावलंबी कुछ न कुछ दान देने का अभिप्राय अवश्य रखते है। दशलक्षण पर्व में व्यक्ति को अपने द्वारा किए बुरे कर्मों की निर्जरा करने एवम बुराई से दूर होने के लिए अवसर मिलता है। ये पर्व जीवो और जीने दो की राह पर चलने की प्रेरणा देता है। इस पर्व के अंत में अपने द्वारा की गई गलतियों पर विचार कर क्षमा मांगी जाती है। दश लक्षण पर्व आत्मशुद्धि का अवसर प्रदान करता है इसलिए इस दौरान पंच अणुव्रत / महाव्रत यथा अहिंसा अर्थात् किसी को दुख, कष्ट ना पहुंचाना, सत्य के मार्ग पर चलना, चोरी ना करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, परिठाह से दूर रहना, जैन धर्म के सिद्धांतों को रेखांकित करता है।

जीवन को सर्वोत्तम तरीके से जीने की कला सिखाने वाले दश लक्षणों को व्यवहार में उतारने का पर्व दशलक्षण महापर्व है। दश लक्षण धर्म में प्रथम धर्म उत्तम क्षमा धर्म है। क्ष अर्थात् क्षरण मा अर्थात् मान का। क्षमा में अपने अहम का अहंकार का का त्याग आवश्यक होता है। यह इसका मूल सिद्धांत है। कितने भी द्वेष, क्लेश, लडाई, झगड़े आदि का कारण अहंकार ही है। क्षमा करना, क्षमा मांगना दोनो ही क्षमा के गुण है। क्षमा के भाव अपना कर हम सभी मानव जीवन को स्वर्ग से भी सांसारिक तौर पर सुंदर, सुखी, आनंद की अनुभूति वाला बना सकते है एवम उसी के द्वारा हम जीवन मरण से छुटकारा पाकर मोक्ष मार्ग की और प्रशस्त सकते है।

क्षमा के ज्ञान हेतु क्रोध की चर्चा होना पूर्णत: मनोवैज्ञानिक है। क्रोध में व्यक्ति दूसरों के साथ स्वयं का भी बहुत नुकसान कर देता है। यह एक ऐसा जहर है जिसकी उत्पत्ति अज्ञानता से एवं अंत पश्चाताप से होता है। क्षमा भाव से हम परिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रव्यापी एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के झगड़े यहां तक की युद्ध भी समाप्त कर सकते है। हम अपनी जीवन यात्रा सुगम कर सकते है।

क्षमा से शारीरिक रोग दूर होते है एवम मानसिक शांति मिलती है। उल्लेखनीय है कि क्षमा धर्म या किसी भी धर्म पर जैन समाज का या किसी का भी कोई भी अधिकार नहीं है, कोई भी इसे अपनाकर अपना जीवन सार्थक बना सकते है। हां, यह जरूर है की जैन धर्मावलंबी क्षमा धर्म को उत्सव, पूजा, कर्म निर्जरा के रूप में प्रति वर्ष ही नही हर पल मनाता है। आज के परिपेक्ष्य में, विध्वंसकारी नीतियों के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय क्षमा दिवस मनाने की आवश्यकता है। विश्व शांति आपके अंत:स्थल पर अंकित होगी। इस तरह जैन धर्म के बताएं मार्ग पर चलकर विश्वशांति सुनिश्चित की जा सकती है। श्वेतांबर धर्मावलंबियों द्वारा इसे पर्युषण पर्व के रूप में 8 दिन तक, इस वर्ष 12 सितंबर से 19 सितंबर तक मनाया गया है।

–संकलन-भागचंद जैन,
अध्यक्ष जैन बैंकर्स फोरम,
जयपुर।

पुस्तक समीक्षा काव्य संग्रह : "बीच सफर में"

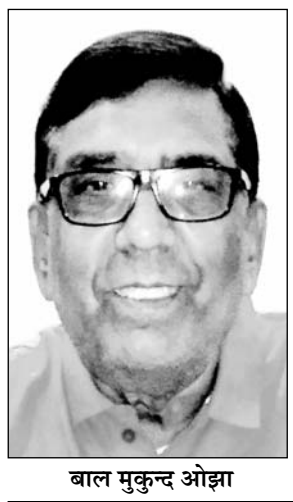

बाल मुकुन्द ओझा

देश और प्रदेश के सुविख्यात कवि, गीतकार, शायर और लघु कथाकार बनवारी शर्मा खामोश किसी परिचय के मोहताज़ नहीं है। दर्जनों प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित खामोश की 1976 से आकाशवाणी और दूरदर्शन से गीत, नज़्में कविताएं बहुतायत से प्रसारित हुई है। खामोश की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्र पत्रिकाओं में हजारों रचनाएं प्रकाशित हुई है। जीवन की सहज अनुभूतियों और संवेदनाओं को प्रकट करता उनका नवीनतम काव्य संग्रह बीच सफर में शीर्षक से हाल ही प्रकाशित होकर विमोचित हुआ है। बीच सफर उनका चौथा काव्य संकलन है। खामोश की कविताओं में जिंदगी के बहुत से रंग है। उन्होंने बहुत साफगोई से कविताओं में अपनी बात कही है। कविता संग्रह की कविताएं सहज ही आकर्षित करती है।

हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में काव्य विधा के रचनाकारों का विशिष्ट योगदान रहा है। प्रस्तुत काव्य पुस्तक में प्रकृति और नैसर्गिक वातावरण को साधारण से शब्दों के माध्यम से संप्रेषित करना एक अनूठा प्रयोग है। निश्चय ही मन पर अमिट छाप छोड़ने वाली है खामोश की कविताएं। पुस्तक केवल कविताओं का ही नहीं बल्कि भावनाओं, संवेदनाओं और अभिव्यक्ति का भी सशक्त संग्रह है। इस संग्रह में कुल 46 कविताओं को शामिल किया है। सभी कविताएं हृदय को छूने वाली है। आशा है कि यह कविता संठाह पाठकों को पसंद आएगा।

बीच सफर काव्य संग्रह में अपनी कविता मत आना में जीवन के सतरंगी संघर्ष को बयां करते हुए कवि लिखते है-

मना किया है
कुछ यादों को
शाम ढले तुम मत आना।

महानगरीय संस्कृति पर कवि अपनी कविता ना भाई ना में लिखते है-

गांव को वापिस
जाते जाते
अपनापन क्यों
छोड़ गए ?
महानगर में
इसका कोई मोल नहीं है।

कवि ने समाज में फैली बुराइयों पर मैने शीर्षक कविता में इन शब्दों से हमला किया है -

झूठों में
सच्चे लोगों का
जिक्र किया मैने
मधुमक्खी के
छत्तें को यूँ ही
छेड़ दिया मैंने

शायद शीर्षक कविता को इन शब्दों में उकेरा -

बड़ी देर तक
सोच समझ कर
बात कही होगी
कड़वी सच्चाई
कहने में देर लगी होगी।

सियासत पर अपनी पेनी निगाह रखते हुए रखते हुए कवि लिखते है -

ये जो आज़ादी के
नग्मे गाने वाले है
फकत जुबानों के झंडे लहराने वाले है।

समीक्षक कृति : बीच सफ़र में।
कवि : बनवारी शर्मा खामोश
प्रकाशक : ज्योति पब्लिकेशन, बीकानेर।
पृष्ठ : 96
मूल्य : 250 रूपये

–बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

बाबा के जयकारों से गूंजी रामदेवरा नगरी

पोकरण/रामदेवरा, (निसं)। रामदेवरा में करोड़ों लोगों की आस्था के प्रतीक लोकदेवता बाबा रामदेव के 639वें भादवा मेले का शुभारंभ भादवा बीज रविवार को अलसुबह बाबा रामदेव की समाधि की विधिवत पूजा-अर्चना के साथ हुआ।

रविवार अलसुबह जिला एवं सत्र न्यायाधीश पूरणमल शर्मा, जिला कलेक्टर आशीष गुप्ता, पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान एवं गादीपति राव भोमसिंह तंवर ने बाबा रामदेवजी की समाधि का पंचामृत से अभिषेक कर उनकी विधिवत पूजा अर्चना की। इस दौरान समाधि पर नई चादर चढ़ाई गई। साथ ही विभिन्न पुष्पमालाओं से समाधि का श्रृंगार किया गया। बाबा को मेवा मिष्ठान एवं मिश्री का भोग लगाया गया। अतिथियों ने बाबा की समाधि पर चंवर ढुलाया तथा बाबा की जोत के दर्शन किए। पुजारियों द्वारा अतिथियों को बाबा का प्रसाद दिया गया व पवित्र झारी का जल आचमन करवाया गया। सभी अतिथियों ने बाबा रामदेव जी की समाधि की पूजा-अर्चना कर देश में अमन, चैन एवं खुशहाली की मंगल कामना की। मंगला आरती के अवसर पर मंदिर के प्रवेश द्वार के खुलते ही बाबा के भक्तजनों ने बाबा के जयकारे लगाते हुए बड़े उत्साह के साथ मंदिर में प्रवेश किया। जयकारों से पूरा वातावरण गुंजायमान हो उठा। सभी भक्त बाबा की समाधि के दर्शन कर अपने आप को धन्य महसूस कर रहे थे। पूरी रामदेवरा नगरी बाबा रामदेव के भक्तों से भरी हुई है। प्रशासन की व्यवस्थाओं के बाद भी बाबा के भक्तों की पांच किलोमीटर से भी लम्बी लम्बी कतारें लगी है। वहीं प्रशासन द्वारा छाया व पानी कि उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण लोगों को दर्द सहना पड़ रहा है। जिला कलेक्टर आशीष गुप्ता एवं पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान ने मेले की व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे भक्तों की सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध रखें एवं मॉनिटरिंग करते रहें। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को सफाई, बिजली एवं पानी की व्यवस्थाओं को सुचारू रखने की बात भी कही। साथ ही सभी अधिकारियों को टीम भावना से काम करने के निर्देश दिए। ,

इस अवसर पर सरपंच समंदर सिंह तंवर, उपखंड अधिकारी गोपाल परिहार, भणियाणा उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश, बीडीओ किशोर कुमार सहित पुलिस व प्रशासन के आला अधिकारी और मंदिर समिति के सदस्य उपस्थित थे।

रामेदवरा में बाबा रामदेवजी की दूज पर भक्तों ने दर्शन किये।

- **लोकदेवता बाबा रामदेवजी के 639वें भादवा मेले का शुभारंभ**

वर्षा नहीं होने से फसलों को नुकसान पहुंचा

सादुलपुर, (निसं)। उपखंड के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अगस्त महीने में मानसून लगभग शुष्क रहा। वही जुलाई महीने में लहरा रही फसलें अगस्त में मानसून का ब्रेक होने के कारण लंबे अंतराल के बाद भी वर्षा नहीं होने से मूंग, चवलां व दल्हन की फसलों में काफी नुकसान पहुंचा। मगर अब बीते एक-दो दिनों में मानसून क्षेत्र में सक्रिय है। हालांकि रविवार को कई जगहों पर बरसात हुई है। वहीं ग्रामीण क्षेत्र में लोग लावणी कटाई में लगे हुए हैं। हर दिन बूंदाबांदी आंधी, तुफान से लावणी कटाई में खासा असर देखने को मिल रहा है। बदले मौसम के चलते किसानों की चिंता की लकीरें दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कर्ज लेकर की गई खेती मानसून कमजोर रहने तथा अब आंधी-तूफान की मार के कारण पैदावार औसत कम होने के कारण घर खर्च चलाना भी बहुत मुसीबतमय हो गया है। उपखंड के भाकरां गांव के समाजसेवी किसान नेतराम मेहरा का कहना है कि हर साल मौसम की मार के कारण किसानों की कमर टूटती जा रही है। सरकार की तरफ से किसानों के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाये जा रहे हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 18 सितम्बर, 2023

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, चित्रा नक्षत्र दिन 12:08 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 4:23 तक, गर करण दिन 12:40 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग दिन 12:08 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 1:12 से मंगलवार दिन 1:44 तक है। आज हरितालिका निषेद है। चन्द्रस्त जयपुर में रात्रि 8:21 पर होगा। आज रोट तीज (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय 7:48 तक, शुभ 9:14 से 10:50 तक, चर 1:52 से 3:23 तक, लाभ-अमृत 3:23 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:17, सूर्यास्त 6:25

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त हो सकते हैं। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक आयोजन हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में सामाजिक-शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सिंह

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कन्या

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। घर-परिवार के कार्यों के लिए भागदौड़ बनी रहेगी।

तुला

मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। मन:स्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

वृश्चिक

धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

धनु

आर्थिक/वित्तीय मामलों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मकर

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक मामलों में आज लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

मीन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।